## सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम शिक्षा है : डॉ. बुनकर

उज्जैन/सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। डॉ. अम्बेडकर का जीवन दर्शन यह बताता है कि उन्होंने स्वयं शिक्षित होकर स्वतंत्र भारत में संविधान निर्माण के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका सम्पूर्ण जीवन दलितोंत्थान के लिए पूर्णतः समर्पित रहा है। विद्यार्थियों को शिक्षित बनकर समाज एवं राष्ट्र निमार्ण में अपना योगदान देना चाहिए। शिक्षा हमारे जीवन के उद्देश्यों को सफल करने का सशक्त माध्यम है।

उक्त प्रेरक उद्गार मुख्य अतिथि विक्रम विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.एल. बुनकर ने डॉ. अम्बेडकर पीठ द्वारा अम्बेडकर जयंती पर आयोजित ''अम्बेडकरवाद की शैक्षणिक विकास में प्रासंगिकता'' विषय पर आयोजित परिसंवाद में विद्योत्तमा छात्रावास में संबोधित करते हुये व्यक्त किये।

अध्यक्षीय उद्बोधन में समाजविज्ञान के संकायाध्यक्ष, कार्यपरिषद के सदस्य एवं अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष एवं आचार्य तपन चौरे ने कहा डॉ. अम्बेडकर ने 'शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करों' का जो त्रयी सिद्धान्त दिया है। उसके माध्यम से वर्तमान वैश्वीकरण के युग में दलित वर्ग अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। डॉ. अम्बेडकर सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री भी थे। उन्होंने भारतीय परिप्रेक्ष्य में आर्थिक क्षेत्र के अनेक शोधोन्मुखी यर्थाथवादी प्रारूपों दिये हैं। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में उनके ये प्रारूप भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बहुत उपयोगी है। विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने विश्व की अर्थव्यवस्थाओं का गहन अध्ययन किया था।

अतिथि वक्ता प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व अध्ययनशाला के उपाचार्य डॉ. रामकुमार अहिरवार ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने महिला शिक्षा को परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए अनिवार्य बताया। शिक्षित बनकर हम अपनी सोच का दायरा विकसित कर सकते हैं। शिक्षा प्राप्त करने के लिए हमें सजग रहने की आवश्यकता है।

परिसंवाद की विशिष्ट वक्ता 'आश्वस्त' पत्रिका की संपादिका एवं शिक्षाविद् डॉ. तारा परमार ने कहा कि शिक्षा मानवीय अधिकार है। डॉ. अम्बेडकर ने बुनियादी सुविधा के अभाव में भी उच्च शिक्षा की सर्वोच्च उपाधियाँ हासिल की थी। डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि शिक्षा समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का सशक्त माध्यम है।

परिसंवाद के विशिष्ट अतिथि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के बौद्ध अध्ययन केन्द्र के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य, प्रो. सूर्यप्रकाश व्यास ने बोध कथाओं के माध्यम से शिक्षा के महत्त्व को निरूपित किया।

परिसंवाद में स्वागत भाषण व विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. अम्बेडकर पीठ के आचार्य डॉ. शैलेन्द्र पाराशर ने डॉ. अम्बेडकर के व्यक्तित्व और कृतित्व को रेखांकित करते हुये शिक्षा के महत्त्व को निरूपित किया। छात्रावास की डिप्टी चीफ कु. वन्या बाजपेई ने अपने विचार व्यक्त किये।

परिसंवाद में अतिथियों का स्वागत आचार्य डॉ. शैलेन्द्र पाराशर, श्रीमती ज्योति चंदेल, श्रीमती शोभा सिंह, कु. प्रिया दुबे, कु. वन्या वाजपेई ने किया।

डॉ. अम्बेडकर पीठ गतिविधियों का वाचन व संचालन शोध अधिकारी डॉ. निवेदिता वर्मा ने किया। आभार डॉ. अम्बेडकर पीठ के आचार्य डॉ. शैलेन्द्र पाराशर ने माना।

प्रातः काल आचार्य शैलेन्द्र पाराशर, डॉ. निवेदिता वर्मा, रतनलाल मालवीय आदि ने टॉवर चौक स्थित डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

दिनांक 15/अप्रैल/2014